नृत्त में अभिनय (कथक नृत्य के संदर्भ में)

रक्षा सिंह
–

नर्तन के तीन अंग होते हैः– (1) नृत्त (2) नृत्य (3) नाट्य

नर्तन के अंगों में सबसे पहले नृत्त आता है। भरत अर्थात् मुनि ने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में कहा है – ''नृत्तंगहारसम्पनन्ना'' अर्थात् नृत्त अंगहार आदि क्रियाओं से सुसम्पन्न होता है। भरत नें नृत्त का सम्बन्ध करण और अंगहारों की शारीरिक क्रियाओं से बताया और इसका प्रारम्भ हस्तक तथा पांवों की क्रिया से कराया है। अनेक शास्त्रकारों के मतानुसार जिस नृर्तन में भाव पर जोर न देकर विभिन्न प्रकार के अंग–भगिमाओं द्वारा लय और ताल पर आधारित प्रदर्शन किया जाए नृत्त के अन्तर्गत आती है।

नर्तन के दूसरे अंग नृत्य के विशय में शास्त्रकारों का कहना है कि नृत्त कला के साथ जब काव्य जुड़ जाता है और नर्तक काव्य के शब्दों की अभिव्यक्ति भावों द्वारा करता है तब उस रसमय नर्तन को नृत्य कहा जाता है। कथक में ठुमरी, पद, भजन , श्लोक, कवित्त आदि इसी के अन्तर्गत आते हैं।

नर्तन के तीनों अंग के बाद मैं अभिनय पक्ष पर चर्चा करना चाहुँगी क्योंकि इस पक्ष के बिना कथक अधुरा है। कथक ही नहीं कोई भी नृत्य भाव के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। कथक नृत्य में अभिनय पक्ष पर प्रकाश डालते हुए सबसे पहले मैं ये सुक्ति लिखना चाहुँगी जो कथक जगत में काफी प्रचलित – ''कथा कहे सो कथक कहलावे'' इससे यह तो स्पश्ट है ही कि कथा वाचन करने वाले एक विशेश समुदाय को कत्थक कहा जाता था। ये लोग मन्दिरों तथा तीर्थ स्थानों में नाच–गाकर पौराणिक कथाओं के कुछ अंश भक्त –दर्शकों के सामने प्रस्तुत करते थे।

चुँकि कथक नृत्य का प्रारम्भ मंदिरों में कथा–प्रधान नर्तन से हुआ इसलिए इस विधा में कथा को कहने के मुख्य माध्यम अभिनय को हम अन्देखा नहीं कर सकते हैं। ''नृत्य मुद्राओं के साथे अभिनय प्रस्तुत किये जाने के कारण कथक अधिक परिणामकारक तथा आकर्शक होता था।''1 अभिप्राय है कि कथक में शुरूआत से ही नृत्त पक्ष से नृत्य पक्ष का आधिक्य होता रहा है। अगर हम कथक नृत्य के वस्तुक्रम को ही देखे तो पाते हैं कि शुरूआत ही अभिनय से होती है। जैसे पद, श्लोक, भजन, स्तुति, वन्दना, आदि। इसमें कलाकार पद या भजन के शब्दार्थ को अभिनय द्वारा प्रस्तुत करता है। इसके बाद कथक के वस्तुक्रम में आता है ठाठ, आमद, परणआमद, उठान, तोड़े, तिहाई आदि जो कि नृत्त पक्ष के अन्तर्गत आते हैं। नृत्त लय–ताल प्रधान होती है। नृत्त का वर्णन नाट्यशास्त्र में सातवें अध्याय में किया गया है, जिसमें लिखा है ''नृत्त में हस्त, कटि, पार्श्व, पाद, जंघा, उदर, वक्षस्थल, चेश्टा एवं क्रियाओं का महत्व होता है। नृत्त किसी गीतार्थ या किसी संवाद के भावाव्यक्ति से सम्बध नहीं है परन्तु रसोत्पत्ति के लिए पूर्ण रूप से सहायक होता है। मेरे विचार से कथक का नृत्त पक्ष इतना सशक्त होने के बावजूद कलाकार की सृजनात्मक और कल्पनिक दृश्टि कहीं न कहीं इनमें भी भाव ढूँढ ही लेती है। जैसे कथक के वस्तुक्रम में स्तुति के बाद किया जाने वाला ठाठ अंग को ही अब देखा जाए तो नर्तक ठाठ के अलग–अलग भंगिमाओं में जब खड़ा होता है तो इच्छानुसार कभी–कभी ये भंगिमाएं किसी नायक या फिर नायिका के अंदाज में भी प्रस्तुत किया जाता है। जैसे आंचल पकड़ने का भाव, राजा या वीर पुरूश के खड़े होने का अंदाज व चेहरे का भाव, नायिका द्वारा बालों में फूल लगाने का भाव आदि। इसमें नर्तक के चेहरे के लालित्यपूर्ण भावों से दर्शकों के मन में रस उत्पन्न होता है। जैसा कि हम जानते है ठाठ शब्द का अर्थ है खड़े होने का खास अंदाज चुँकि यह विलंबित लय में करते हैं इसलिए इसमें भृकुटि, कसक–मसक (कलाई का प्रयोग एवं सांसों का उतार–चढ़ाव) गरदन का डोरा आदि शरीर के इन सूक्ष्म अंगों के संचालन को समाहित करना आसान होता है। ठाठ के अन्तर्गत ही दो प्रकार के ठाठ किये जाते हैं। (1) नायक के ठाठ (2) नायिकाओं के ठाठ

नायक और नायिकाओं का नाम आते ही कलाकार अपनी कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता से उन अर्थहीन शब्दों को अर्थ देकर उसके भाव को आंगिक अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं। जिसकी रसानुभूति दर्शकों को आनंदित करती है। तत्पश्चात् आमद की बात करें तो ये कहना उचित है कि शायद अपने मूल स्वरूप में नृत्त के अन्तर्गत ही आता है। ''किन्तु स्व० षम्भू महाराज जी व लच्छू महाराज जी आमद के बोलों पर कभी–कभी कोई भाव भी दिखा दिया करते थे, जिसे लच्छू महाराज जी हिन्दुशैली कहा करते थे।''2ये भाव कभी भक्तिपूर्ण होते या फिर कभी श्रृंगारिक। जिस प्रकार मुर्ति शिल्प कला में राधा–कृश्ण शिव–पार्वती,और ब्रह्मा–विश्णु–महेश की संयुक्त प्रतिमा दिखाई देती है उसी तरह कथक के गुरू स्व० लच्छु महाराज जी पारम्परिक आमद की बंदिश पर देवताओं की छवि को दर्शाते थे और प्रस्तुत करते थे। लच्छु महाराज जी का नृत्य लास्य अंग परिपूर्ण अर्थात् भावपूर्ण नृत्य था शायद इसीलिए उनकी कल्पनाशक्ति नृत पक्ष में भी उन्हें भाव दिखाती थी। उनकी इन कलाकृतियों से प्रेरित होकर आज भी

घातकथु..... जैसे पांरपरिक बोलों पर विविध रूप से भाव प्रस्तुत किया जाता है। केवल घा त क थुंगा..... ही नहीं कई तोड़े, तिहाई है जिनको किसी विशेश भाव के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास काफी दर्शनीय होता है। मैंने तो अपने गुरू पं० बिरजू महाराज जी को ही इस तरह की सृजनात्मक प्रस्तुती करते हुए ..... बारम्बार देखा है। एक निरर्थक तोड़े, तिहाई द्वारा किस तरह चिड़िया, हिरण मोर, शेर, बतख कोयल आदि का संजीव चित्रण दर्शकगण को आकर्शित करता है। और इस कला से अछूते दर्शकों भी लेता हूँ।
नाट्यशास्त्र में भरत् कहते हैं कि

न खल्वर्थ, कश्चिन्नृत मपेक्षते।
किन्तु शोभा प्रजनयेदिति नृत्तं प्रवर्तितम।।

आचार्य भरत कहते हैं कि नृत्त से विशेश अर्थ की अपेक्षा नहीं होती किन्तु शोभा यानि सुन्दरता के उददे्श्य से इसका संयोजन किया जाता है, यहाँ पर अर्थ की अभिव्यक्ति का निशेध नहीं किया गया है अर्थात् जहाँ आवश्यकता होती है नृत्त अर्थ की अभिव्यक्ति भी कर सकता है।

जैसे वस्तुक्रम के अलग चरण में आता है तोड़ा, परण, प्रमिलू, जिनमें नृत्य के बोलों को आंगिक अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है वैसे तो ये बोल अपने आप में अर्थहीन होते हैं लेकिन कलाकार की कल्पनाशक्ति एवं क्षमता के द्वारा रचित कुछ विशेश रचनाएं भावाभिव्यक्ति में पूर्ण रूप से सहायक होती है। उदाहरण के लिए रायगढ़ के दरबार में इस तरह की कई रचनाएँ रची गई जिसमें तबले–परवाजन के बोलों के साथ पक्षियों की ध्वनि, मेधध्वनि, बिजली की ध्वनि से समानता रखने वाले बोलों को भी सम्मलित किया गया। जैसे कड़क–बिजली, दल–बादल परण, गज–बिलास, किलकिला, अमृतध्वनि मीण–परण इत्यादि।

आचार्य भरत द्वारा यह बात कहीं जा चुकी है कि जहाँ आवश्यकता होगी वहाँ नृत्त अर्थ की अभिव्यक्ति भी करेगा। इसलिए नृत्तांग के अन्तर्गत आने वाली कथक का एक विशिश्ट अंग है गत निकास जिसका अर्थ है कि गति के साथ निकलकर आना या प्रकट होना। इसमें सामान्य रूप से पैर की विभिन्न गतियों के प्रदर्षन के साथ– साथ सार्थक हस्त–मुद्राओं के प्रदर्षन से किसी विषेश अर्थ की सृश्टि की जाती है। यहॉ अर्थ में किसी कथानक की अनिवार्यता नहीं होती बल्कि किसी वस्तु अथवा पात्र का सार्थक चित्र प्रस्तुत करना ही अभीश्ट होता है। जैसे – मुरली की गत, घूंघट, मुकुट, मटकी, बिंदिया, झूमर, रूखसार, नाव, कटार आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कलाकार अपनी सृजनात्मक सोच एवं कल्पनाषील विचारों से किस तरह निरर्थक को सार्थक करता है। जिसके साकार होने से एक साधारण दर्षक भी आनंदित, भावमय एवं रसमय हो जाता है। यह मेरा अपना निजी अनुभव भी है कि मंच प्रस्तुति के दौरान मैंने एक तिहाई के तीनों पल्लों को अलग अलग भावों द्वारा दिखाया और दर्षकों द्वारा इस भावाभिव्यक्ति लिए खूब सराहना मिली। अपने गुरू द्वारा दिए गए षिक्षणकाल में हमनें सीखा किस तरह अपनी नवीन कल्पनाओं से नृत्त पक्ष को अभिनय युक्त बनाया जाता है जो साधारण से साधारण दर्षकगण को रसानुभूत करता है। चुंकि भावों को किसी भाशा की आवष्यकता नहीं होती इसलिए ये सदैव दर्षकों के मन तक पहुँचते हैं।
इस तरह हम देखतें हैं कि किस प्रकार कथक नृत्य में नृत्त पक्ष को अभिनय द्वारा ज्यादा आकर्शित बनाता जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कथक आदि कथक – रोशनदाते
2. कथक नृत्य शिक्षा–2 –डा0 पुरू दाधिच